Dr. Vandana Kumari
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
M.A. Semester-2 Philosophy CC-09
Indian and Western Ethics

'Hare: Prescriptivism' (परामर्शवाद) 1

हेयर की किताब दि लैंग्वेज ऑफ मॉरल्स (1952) का अधिनीतिशास्त्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। हेयर ने अपनी किताब में परामर्शवाद (Prescriptivism) का समर्थन किया है जो संवेगवाद के बाद दूसरा प्रमुख अज्ञानात्मक (non-cognitivist) सिद्धान्त है।

नैतिक भाषा न तो आदेशपरक हो सकती और न ही शुद्ध भावनापरक। यह वस्तुतः सलाहपरक ही हो सकती है और स्पष्ट ही सलाह न तो आदेश है न ही भावना का प्रदर्शन और न ही भावना उत्पन्न करने का साधन। कोई भी सलाह निश्चित रूप से तार्किक ही हो सकती है और इसमें औचित्य का अनुपालन भी आवश्यक ही है। आर. एम. हेयर नैतिक भाषा के इस सलाहपरक रूप को ही उसका सही रूप मानते हैं। उनके इस सलाहपरक मत को 'परामर्शवाद' कहा जाता है।

हेयर के अनुसार नैतिक भाषा सलाह देती है और इसमें किसी प्रकार का दबाव नहीं बल्कि औचित्य ही प्रासंगिक होता है और औचित्य के साथ तो तार्किकता का होना आवश्यक ही है और फिर इसमें समान बर्ताव का होना भी जरूरी ही है। चूँकि किसी भी सलाह के संबंध में यह पूछा जा ही सकता है कि वह स्वीकारयोग्य क्यों है, इसलिए इसके पीछे तर्कसंगत कारण का होना तथा उसका समान परिस्थितियों में सबों के लिए समान

ढंग से लागू होना भी जरूरी ही है। यहाँ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि चूंकि नैतिक भाषा सलाहपरक होती है, इसलिए वह वर्णनात्मक नहीं हो सकती। सलाह वास्तविक स्थिति का वर्णन नहीं करती। वह तो सलाह पाने वाले को वास्तविक स्थिति के अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरणा ही देती है। लेकिन तब कोई भी सलाह वास्तविक परिस्थिति की अवहेलना भी नहीं कर सकती। यद्यपि वह नैतिक तभी हो सकती है जब वह नैतिक सिद्धान्तों के अनुरूप होती है, लेकिन तब भी सिद्धान्तों का क्रियान्वयन तो किसी परिस्थिति में ही हो सकता है। हेयर ने नैतिकता को बुद्धि के साथ जोड़कर उसे एक सही रूप देने का प्रयास किया है।

~~नैतिकता~~ हेयर के अनुसार नीतिशास्त्र नैतिकता की भाषा का तार्किक अध्ययन है। हेयर के अनुसार अगर किसी व्यक्ति के बारे में हम यह पूछते हैं "उसके नैतिक सिद्धान्त क्या हैं?" तो इसका सही उत्तर यह देखने से मिलेगा कि उसका आचरण कैसा है। चाहे वह अपनी बातचीत में किन्हीं भी नैतिक सिद्धान्तों का समर्थन करता हो, वह दरअसल में किन नैतिक सिद्धान्तों में विश्वास रखता है, यह बात इससे सामने आ जाती है कि वह वास्तविक स्थितियों में वैकल्पिक कार्यों में किस कार्य को चुनता है।

हेयर के अनुसार आई आचरण से नैतिक सिद्धान्तों की जानकारी इसलिए मिलती है क्योंकि नैतिक सिद्धान्तों का कार्य है आचरण का मार्गदर्शन करना। नैतिकता की भाषा एक किस्म की परामर्शात्मक भाषा है। हेयर के अनुसार 'हमें क्या करना चाहिए?' यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे लम्बे समय तक टाला नहीं जा सकता है। हेयर के विचार में एक ऐसे विश्व में, जहाँ आचरण की समस्या दिनोदिन अधिक जटिल और कष्टदायी होती जा रही है, इस भाषा को समझना बहुत आवश्यक है, जिसके माध्यम से नैतिक प्रश्न उठाए जाते हैं और उनके उत्तर दिए जाते हैं। क्योंकि नैतिकता की भाषा के बारे में संशय से न सिर्फ सैद्धांतिक उलझनों का, बल्कि अनावश्यक व्यावहारिक कठिनाइयों का भी जन्म होता है।

हेयर के अनुसार नैतिक सिद्धान्तों का कार्य आचरण का मार्गदर्शन करना होता है। नैतिकता की भाषा एक किस्म की परामर्शात्मक भाषा है। दूसरे शब्दों में यह हमें कैसे आचरण करना है इस बारे में परामर्श देती है या मार्गदर्शन करती है।

हेयर ने परामर्शात्मक भाषा को आदेशात्मक वाक्य (Imperative) और मूल्य-निर्णय (Value Judgment) में बाँटा है। फिर आदेशात्मक वाक्य को एकव्यापी और सर्वव्यापी में बाँटा है। तथा मूल्य-निर्णयों को भी "गैर-नैतिक" और नैतिक में

विभाजित किया है।

- परामर्शात्मक भाषा
  - आदेश
    - एकव्यापी
    - सर्वव्यापी
  - मूल्य-निर्णय
    - गैर-नैतिक
    - नैतिक

हेयर ने अपनी किताब में सबसे पहले साधारण आदेशात्मक वाक्यों (Imperatives) की चर्चा की है, जो उनके अनुसार, सबसे सरल किस्म की परामर्शात्मक भाषा है। हेयर के अनुसार इस किस्म के वाक्यों का तार्किक आचरण (logical behaviour) नैतिकता की भाषा के विद्यार्थियों के लिए बहुत काम का विषय है, क्योंकि इससे नैतिक सिद्धांत के क्षेत्र की कई समस्याएँ आसानी से समझ में आने योग्य रूप में सामने आती है। हेयर के विचार में आदेशों का अध्ययन नीतिशास्त्र के अध्ययन के लिए सर्वोत्कृष्ठ परिचय है।

एकव्यापी (Singular) आदेशों के बाद हेयर ने सार्वभौमिक या सर्वव्यापी (Universal) आदेशों की चर्चा की है। इन सार्वभौमिक आदेशों को कैसे स्वीकार और

स्वीकार किया जाता है, इसकी चर्चा द्वारा हेयर ने सिखने और सीखने की प्रक्रिया का और इसके लिए इस्तेमाल की जानेवाली भाषा के तर्कशास्त्र का वर्णन किया है। आदेशों की चर्चा के बाद हेयर ने गैर-नैतिक मूल्य-निर्णयों (non-moral Value-Judgment) की चर्चा की है, जो उनके अनुसार आदेशों की तुलना में नैतिकता की भाषा के अधिक करीब है। हेयर ने ऐसे सभी वाक्यों को जिनमें "चाहिए" (ought) "उचित" (right) और "अच्छा" (good) जैसे शब्द हों, और जो नैतिक निर्णय न हो "गैर-नैतिक मूल्य निर्णय" कहा है। हेयर के अनुसार इनके अध्ययन से नीतिशास्त्र की समस्याओं को समझने में सहायता मिलती है। हेयर ने बारी-बारी से दो प्राथमिक नैतिक शब्दों "अच्छा" और "चाहिए" की चर्चा की है। उन्होंने पहले इन शब्दों के "गैर-नैतिक" इस्तेमालों की चर्चा की है, फिर इनके "नैतिक" इस्तेमालों की और दिखाने का प्रयत्न किया है कि दोनों किस्म के इस्तेमालों के बीच में कई समानताएं हैं।